International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, July-December 2021, Submitted in September 2021, iajesm2014@gmail.com

लोकतन्त्र में समानता के सिद्धान्त

डॉ0 निरंजन शर्मा, प्राचार्य राजेन्द्र प्रसाद सह–शिक्षा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रावतसर

परिचयात्मक शोध की भूमिका

अभिजन शब्द का प्रयोग वास्तव में अब प्रकार्यात्मक तथा मुख्य रूप से व्यवसायिक समूह के लिये किया जाता है, जो कि, समाज में (कुछ कारणों से) एक उच्च प्रस्थिति प्राप्त करते है। लासवेल ने भी अभिजन की परिभाषा उच्च स्थिति के रूप में की है, ''अभिजन की अवधारणा वर्गात्मक तथा वर्णनात्मक प्रकार की है, जो समाज में उच्च पद प्राप्त लोगों के प्रति संकेत करती है।

अभिजन–वर्ग उस सामाजिक श्रेणी का प्रतिनिधित्व करता है, जो कम या अधिक इज्जत, स्थिति और कुछ उदाहरणों द्वारा जनसंख्या का विशाल भाग पर प्रभाव का अनुभव करता है।

जनतंत्र शासन व्यवस्था समानता के आधारभूत सिद्धान्त पर आधारित होती है परन्तु लोकतन्त्र में भी व्यवहारिक रूप से समानता के सिद्धान्त का पूर्णरूपेण पालन नहीं हो पाता है। विभिन्न कारण जैसे–सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि, वशांनुगत आधार, धर्म–जाति भेद, ज्ञान, शिक्षा तथा कार्य करने की कुशलता आदि लोकतऩ्त्र में राजनीतिक समानता के सिद्धान्त को अर्थहीन बना देते है और इन्हीं असमानताओं के परिणामस्वरूप कुछ ''विशिष्टजन ''शासन में पहुँचकर शासन व्यवस्था का सचांलन करते है इन्ही विशिष्ट लोगों को ''अभिजन'', ''श्रेष्ठजन'' अथवा 'इलीट' के नाम से जाना जाता है। ''इलीट'' शब्द लैटिन भाषा के ''इलीगेरी'' शब्द से बना है, जिसका अर्थ हातो है ''चुनना''। ''ऑक्सफोर्ड'' अंग्रेजी शब्द कोष के अनुसार ''इलीट'' शब्द का प्रयागे सन् 1823 में हुआ। फ्रॉन्सीसी भाषा में इलीट शब्द का प्रादुर्भाव 14वीं सदी के लगभग हुआ था, जिसका अर्थ था ''च्वॉयस''। 16वीं सदी में ''इलीट'' शब्द का यही अर्थ लगाया जाता था।

परिचयात्मक शोध के सोपान

यदि व्यक्तियों का वर्गीकरण उनके राजनीतिक तथा सामाजिक प्रभाव अथवा सत्ता के आधार पर किया जाए तो, अधिकाशं समाजों में यह स्थिति सामने आयेगी कि, जिन व्यक्तियों का सम्पत्ति वितरण सम्बन्धी अनुक्रम में जो स्थान था, वही स्थान उन्हें इस अनुक्रम में भी मिलेगा। तथाकथित उच्च वर्ग आमतौर से सबसे अधिक सम्पन्न भी होता हैं। यह वर्ग ''अभिजन'' या कुलीन वर्ग का प्रतिनिधित्व भी करता है।

परिचयात्मक शोध का महत्व

समाज में नवीन हितों अथवा सामाजिक शक्ति के उदय होने पर, अभिजन के प्रभुत्व में परिवर्तन होता है। मोस्का के अनुसार, जब कभी समाज में नवीन आर्थिक हित उभरता है अथवा नवीन ज्ञान अविष्कृत होता है अथवा समाज में कोई नवीन विचारधारा फैल जाती है, तब अभिजनों का प्रभुत्व स्थापित हो जाता है। इस प्रकार कोई सम्भ्रान्त संगठन, उस समाज की सामाजिक शक्तियों का प्रतिबिम्ब होता है। कोई भी शासक वर्ग, समाज एवं अर्थव्यवस्था में होने वाले परिवर्तनों की अनदेखी कर अधिक दिनों तक अपना प्रभुत्व कायम नहीं रख सकता है। अतः अभिजनों की उत्तरजीविता समाज के लिए विभिन्न हितों के अनुरूप नीतियों के समन्वित करने की क्षमता पर निर्भर है।

मिचेल्स की मुख्य मान्यता है कि, संगठित समाज की संरचना, अभिजन के उदय का स्रोत है। अभिजन की शक्ति संगठन पर निर्भर करती है। मिचेल्स के शब्दों में, जो संगठन की

बात करता है, वह अल्पतन्त्र की वकालत करता है। मिचेल्स ने समस्त सामाजिक संगठनों के शासन के लिए एक नियम जिसे अल्पतन्त्र का लौह नियम कहते है, का उल्लेख किया है।

परिचयात्मक अध्ययन की सार्थकता

मोस्का के शब्दो में ''सभी राजनीतिक सरंचनाओं में समान रूप से पाए जाने वाले तत्वों और प्रवृत्तियों में से एक तत्व इतना स्पष्ट है कि, विहगंम दृष्टि डालने पर भी दिखाई पड़ जाता है। जो समान नाम मात्र के लिए ही विकसित हो पाए है, जिसमें सभ्यता का विकास कठिनता से हुआ है। उनसे लेकर अत्यधिक विकसित और शक्तिशाली समाजों तक प्रत्यके समाज में दो वर्ग उभर आए है– 1. शासक वर्ग 2. शासित वर्ग। प्रथम वर्ग में लोगों की संख्या कम होती है, लेकिन समस्त राजनीतिक क्रिया कलाप उन्हीं के द्वारा किए जाते है, शासन की समस्त शक्ति इन्ही के हाथों में निहित होती है और शासन की शक्ति का उपयोग भी इन्ही के द्वारा होता है।

परिचयात्मक शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन निम्नलिखित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सम्पादित किया गया है।

1. राजनीतिक उच्चस्तर वर्ग के भौतिक साधनों के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
2. राजनीतिक उच्चस्तर वर्ग की सामाजिक स्थिति तथा उनके पूर्वजों की सामाजिक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. राजनीतिक उच्चस्तर वर्ग के राजनीतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
4. राजनीतिक उच्चस्तर वर्ग के राजनीतिक सहभागिता के अवधि का अध्ययन करना।
5. एकाकी परिवार से सम्बन्धित राजनीतिक उच्चस्तर वर्गो में अन्य पारिवारिक स्वरुपों से प्रस्थिति जागरुकता का अध्ययन करना।

सन्दर्भ–ग्रन्थ

आक्सर लेविस :	1955	"गुफ डाइनामिक्स इन नार्थ इण्डियन विलेज" – ए स्टडी इन फैक्सन, उद्धृत रघुराज गुप्त तथा एस0 एन0 मुन्शी, पूर्वोक्त, पृ0 133–134.
आर0पी0 ठाकुर :	1981	"इलीट थ्योरी एण्ड एडमिनिस्ट्रेटिव सिस्टम" स्टरिलिंग पब्लिशर्स, नईदिल्ली, पृ0 36
इकबाल नारायन तथा अन्य :	1976	''द रूरल इलीट इन एन इण्डियनस्टेट, मनोहर बुक सर्विस, दिल्ली, पेज16–17
इबिलाइन सल्लेराट :	1971	वीमेन सासे इटी एण्ड चेन्ज (आंग्ल भाषा में अनुवाद) के मागरिट स्कॉटफोड, पृष्ठ–75।
ई0वी0 हैबेल द्वारा उद्धृत :	1965	पंचायत राज (सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली), पृ0 59.
ई0वी0 हैबेल द्वारा उद्धृत :	1965	पंचायतराज (सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली), पृ0–63.ऋग्वेद : 1/114/1 तथा 5/54/8 (मण्डलसूक्त मंत्र) भाष्यकार वेंकटमाधव निश्वेश्वरानन्द, वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर, 1964, पृ0–11.